1. शोधार्थी का नाम :–

(अंग्रेजी में) :– SHIVPAL SAMOTA

(हिन्दी में) :– शिवपाल सामोता

2. शोध कार्य का शीर्षक :–

(अंग्रेजी में) :– **"A Study of Adjustment and Emotional Intelligence of Senior Secondary Level Students "**

(हिन्दी में) :– ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन''

3. स्थान (Location) :–

A. Institution/Department where the work is to be done:–

H.B.U. Teachers College for Women, Hatundi(Ajmer)

B. Geographical area of Investigation, If any :–

Jaipur (Raj.)

4. प्रस्तावना :–

मानव एक सामाजिक प्राणी है। मानव का विकास क्रमिक होता है। जिस समय वह जन्म लेकर इस संसार में आता है तो वह मात्र एक अबोध शिशु होता है तथा इस संसारिक मोह–माया से दूर अपने भविष्य से बेखबर होता है। इस अवस्था में शिशु ना तो सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक होता है। वह बाह्य वातावरण से पूर्णतया अनभिज्ञ रहता है। लेकिन यह अवस्था अल्प समय के लिये तथा अस्थाई होती है। इस अवस्था में बालक अधिक समय तक नहीं रहता है। जैसे–जैसे उसकी आयु बढती जाती है। वैसे–वैसे वह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास करता जाता है। इस विकास एवं आयु के बढने के साथ–साथ बालक अपनी शैशवावस्था को त्यागकर बाल्यावस्था में प्रवेश कर जाता है। बाल्यावस्था में बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास में स्थिरता पायी जाती है। इस अवस्था में बालक समाज का अंग तो बन जाता है परन्तु समाज के प्रभाव से वह दूर ही रहता है।

बाल्यावस्था के पश्चात् बालक एक ऐसी अवस्था में पहुंचता है जो कि उसके जीवनकाल में विशिष्ट स्थान रखती है। यह अवस्था उसके भावी जीवन हेतु नींव के रूप में होती है एवं बालक के भविष्य की निर्धारक होती है। यह अवस्था ''किशोरावस्था'' कहलाती हैं। 12वर्ष से 18–19 वर्ष की आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाएँ इस अवस्था में आते हैं। क्रो एण्ड क्रो ने कहा है कि, ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।''

किशोरावस्था जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती हैं। किशोरावस्था में बालकों एवं बालिकाओं में क्रान्तिकारी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में परिवर्तन अधिक होते हैं। अतः इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए किशोरावस्था प्रारम्भ होने के समय से ही शिक्षा को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया जाना अनिवार्य हैं। इस अवस्था में बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, शैक्षिक एवं सामाजिक विकास के लिये शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये। इसके साथ ही किशोरों को व्यावसायिक, धार्मिक, नैतिक, यौन शिक्षा आदि की व्यवस्था के साथ–साथ निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था भी करनी चाहिये। स्टेनले हॉल के अनुसार, ''किशोरावस्था बडे संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था हैं'। ''अतः इस अवस्था में समायोजन मुख्य समस्या होती है'। वैसे तो व्यक्ति को हर अवस्था एवं क्षेत्र में समायोजन करना पड़ता हैं तथा उसे परामर्श की आवश्यकता होती हैं परन्तु किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था होने के कारण समायोजन एवं परामर्श का महत्व इस अवस्था के लिये और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

अपने संवेगों को समझना एवं संवेगों का प्रबन्धन करने के साथ–साथ दूसरों के संवेगों को समझते हुए व्यवहार करने की क्षमता संवेगात्मक बुद्धि कहलाती हैं। व्यक्ति का व्यवहार पूरी तरह संवेगात्मक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर निर्भर करता हैं। अतः समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि परस्पर सहसम्बन्धित हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण बालकों में शारीरिक संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक अन्तर पाये जाते हैं। विद्यार्थी लिंग, संकाय, निवास, भाषा, वेशभूषा आदि में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। बालकों का विकास एवं व्यक्तित्व आनुवांशिक एवं वातावरण के कारकों से प्रभावित होता है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार ही अलग–अलग बालकों की अलग–अलग विशेषताऐं तथा आवश्यकताऐं होती हैं। अतः बालकों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था करने और उनके सर्वांगीण विकास के लिए उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं में प्रत्येक बालक समायोजन की क्षमता और संवेगात्मक बुद्धि की मात्रा में भी अलग–अलग होता है। इन क्षमताओं और व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रभावों का अध्ययन तथा इनके आपसी सहसम्बन्ध को जानना एक शिक्षक एवं शिक्षाविद् के लिये आवश्यक हो जाता है, ताकि बालकों को उचित शिक्षा एवं परामर्श उपलब्ध हो सके।

समस्या का औचित्य एवं महत्व तथा अध्ययन की आवश्यकता :-

अध्यापक, माता–पिता व अन्य प्रौढ़ व्यक्ति जो किसी न किसी रूप में किशोर के संसर्ग में आते रहते हैं, उनके लिए किशोर, किशोरावस्था एवं किशोर विकास के गहन अध्ययन की आवश्यकता है। इसके अभाव में वे किशोर के उचित पथ–प्रदर्शक भी नहीं बन सकते तथा इसके विपरीत अत्यधिक नियंत्रण

बनाये रखने के प्रयत्न में वे उसकी निर्बाध वृद्धि एवं विकास में रूकावट डालने लगते हैं। कुछ लोग किशोर–मनोविज्ञान का शास्त्रीय एवं व्यावहारिक रूचियों के कारण भी अध्ययन करते हैं। अध्ययन किसी भी दृष्टि से किया जाए वह व्यक्ति को किशोरों से अधिक बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार करने तथा किशोर–विकास में उचित सहयोग प्रदान करने में समर्थ बनाता है। किशोरावस्था के अध्ययन के अभाव में व्यक्ति किशोरों की आवश्यकताओं, समस्याओं एवं रूचियों आदि को नहीं समझ पाते हैं और इस कारण कभी भी किशोरों को घर, कक्षा–कक्ष, विद्यालय या समाज में उचित व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं दे पाते। किशोरों के सामने समायोजन की अनके समस्याएं होती हैं। किशोर अपने शारीरिक परिवर्तनों के कारण स्वयं भी चकित रहता है तथा भावात्मक रूप से भी उसकी कठिनाइयां कम नहीं होती है। हर एक किशोर में समायोजन योग्यता अलग–अलग अनुपात में होती है। समायोजन के समान ही हर किशोर की सांवेगिक बुद्धि और स्थिरता दूसरे किशोर से भिन्न होती है। ये भिन्नताऐं बालक के निवास, लिंग, विद्यालय के प्रकार, संकाय, सामाजिक स्थिति, आर्थिक–राजनैतिक स्थिति एवं आनुवांशिक गुणों के कारण होती है। इन सभी कारणों के आधार पर बालकों का गहन अध्ययन करके समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध समझा जा सकता है। किशोरों की संवेगात्मक आवश्यकताओं को समझकर उसके लिए संवेगात्मक परामर्श की व्यवस्था की जा सकती है। किशोरावस्था बहुत ही संवेदनशील अवस्था होती है। इस अवस्था में बालकों के उचित मार्गदर्शन के अभाव में वे समाज विरोधी हो जाते हैं एवं उनका व्यक्तित्व विकृत हो जाता है। इससे वे समाज एवं देश के लिए खतरा बन सकते हैं। किशोर के समायोजन एवं

संवेगात्मक बुद्धि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसे बिना गहन अध्ययन के नहीं समझा जा सकता है।

अतः हमारा अध्ययन **''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन''** महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। इस अध्ययन से भारत की बहुत बड़ी आबादी जो कि किशोरावस्था की है, उसके सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट होंगे। वे तथ्य किशोरों की शिक्षा व्यवस्था एवं व्यक्तित्व निर्माण में माता–पिता, अध्यापकों एवं परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इन सब पक्षों के मध्यनजर अनुसंधानकर्ता ने किशोर विद्यार्थी जो उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कर रहे हैं, उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं उनका समायोजन को चरों के रूप में अध्ययन करने का निर्णय लिया है।

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन''

शोध के उद्‍देश्य :–

प्रस्तावित शोध के उद्‍देश्य निम्नलिखित हैं –

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का उसके स्वतंत्र चरों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उसके स्वतंत्र चरों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के सहसंबंध का अध्ययन करना।

तकनीकि शब्दों का पारिभाषीकरण :–

उच्च माध्यमिक स्तर :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार सम्पूर्ण देश में शैक्षिक संरचना हेतु 10+2+3 के ढ़ाचे को सम्पूर्ण देश में लागू किया गया। इसे 10वीं तक की माध्यमिक शिक्षा, 10+2 उच्च माध्यमिक एवं 10+2+3 की उच्च शिक्षा माना गया। अतः माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य की दो वर्ष की शिक्षा का स्तर उच्च माध्यमिक स्तर कहलाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से हमारा तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राज. से मान्यता प्राप्त हैं एवं जिनमें कक्षा 11वीं एवं 12वीं तक के विद्यार्थियों को पढ़ाया (शिक्षा दी) जाता है।

किशोर विद्यार्थी :–

कुल्हेन के अनुसार, ''किशोरावस्था, बाल्यावस्था एवं प्रौढ़ावस्था के मध्य का संक्रमण काल होता है।'' इस कथन से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था, बाल्यावस्था एवं प्रौढ़ावस्था के मध्य का काल है। यह काल 12 वर्ष से 18–19 वर्ष के मध्य के बालकों की आयु वर्ग का होता है एवं इस काल में बालक अपनी सभी शक्तियों में परिपक्व हो जाता है।

किशोर विद्यार्थियों से हमारा तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जिनकी आयु 12 वर्ष से 18 वर्ष के मध्य है एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से मान्यता प्राप्त विद्यालयों की कक्षा XIth तथा XIIth में अध्ययन कर रहे हैं।

समायोजन :–

गेट्स तथा अन्य के अनुसार, ''समायोजन शब्द के दो अर्थ होते हैं। प्रथम अर्थ में यह एक जीवन में लगातार चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने एवं पर्यावरण के मध्य संतुलन सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है– द्वितीय अर्थ में समायोजन एक अवस्था है अर्थात् व्यक्ति की एक संतुलित दशा है जिसे हम सुसामंजस्ययुक्त व्यक्ति कहते है।'' इस प्रकार परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति का स्वयं का ढलना अथवा स्वयं के अनुसार परिस्थितियों को ढालकर सामन्जस्य स्थापित करना ही समायोजन कहलाता हैं।

समायोजन से हमारा आशय किशोर विद्यार्थियों की उस योग्यता से है, जिसकी सहायता से किशोर विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने अथवा अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर अथवा परिस्थितियों के अनुकूल बनकर करते है।

संवेगात्मक बुद्धि :–

डेनियल गोलमैन के अनुसार, ''संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के स्वयं के एवं दूसरे के संवेगों को पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को स्वयं में और अपने संबंधों के दौरान भली

प्रकार साधने में सहायक होती है।'' इस प्रकार व्यक्ति का स्वयं के संवेगों को समझना, दूसरों के संवेगों को समझना एवं उन्ही के अनुरूप अपने संवेगों का प्रबंधन करने की क्षमता संवेगात्मक बुद्धि कहलाती है।

संवेगात्मक बुद्धि से हमारा तात्पर्य किशोर विद्यार्थियों की उस समग्र क्षमता से है, जो विद्यार्थियों में स्वयं की विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उनकी सहायता करती है।

5. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–

❖ **सोनी, अनिता (2003**) ने, ''सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं की समस्याओं, समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन'' पर शोध कर निष्कर्ष निकाला कि सहशिक्षा छात्राओं का समायोजन कन्या विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अच्छा पाया जाता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन में ग्रामीण सहशिक्षा छात्राओं का समायोजन तुलनात्मक रूप से अच्छा है।

❖ **सईद, नवीला एवं कुमारी, के. भारती (2004)** ने, "किशोरों में समायोजन एवं अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न लिंगों के विभिन्न वातावरणों में समायोजन और अधिगम शैलियों में नकारात्मक सहसम्बन्ध था। विभिन्न स्थानों के लोगों की अधिगम शैलियों व समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

❖ **थॉमस, डैनी एवं शर्मा, वेंकटेश (2006)** ने, '' ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि समान है। शहरी छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि समान है। ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि से अधिक है। ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि से अधिक है।

❖ **सिंह, प्रियंका (2006)** ने ''अभावों का कष्ट एवं संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्धों का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि अभावों का कष्ट एवं संवेगात्मक बुद्धि एक दूसरे से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित हैं। अभावों का कष्ट छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि को बुरी तरह से प्रभावित करता है। यह दर्शाता है कि उच्च अभावों के कष्ट वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि निम्न अभावों का कष्ट झेलने वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना में कम होती है।

❖ **सी. जायन(2006)** ने ''संवेगात्मक दक्षताएँ व निष्पादन के सम्बन्धों का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य करके निष्कर्ष निकाला कि श्रेष्ठ निष्पादक, अन्य प्रबन्धकों से ज्यादा संवेगात्मक दक्षताएँ रखते हैं तथा संवेगात्मक बुद्धिमता, कार्य निष्पादन से उच्च धनात्मक सहसंबंधित है'।

❖ **कुक, डेंग और मोरगनो (2007)** ने ''मध्य किशोरावस्था के दौरान मित्रता के प्रभावः मित्रों की श्रेणी का विशेष मूल्य'' शीर्षक पर शोध कार्य करते हुए निष्कर्ष निकाला कि जिन बालकों के साथी निम्न मानसिक स्वास्थ्य

वाले होते हैं, उनमें अवसाद और क्रोध के अधिक लक्षण दिखाई देते हैं। ये बालक जीवन के कठिन अनुभवों से अनुकूलित होने की कम क्षमता रखते हैं।

❖ **ऑर्थ, रॉबिन्स एवं राबर्टस (2008)** ने ''किशोरावस्था एवं युवावस्था में न्यून स्वाभिमान से अवसाद के पूर्वनुमान की संभावनाएँ'' शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि किशोर बालक एवं बालिकाएँ नकारात्मक स्व छवी और निम्न स्वाभिमान द्वारा उत्पन्न समस्याओं में भिन्न होते हैं। दोनों में निम्न स्वाभिमान द्वारा उत्पन्न समस्याओं में भिन्न होते हैं। दोनों में निम्न स्वाभिमान उनके अवसाद से संबंधित हैं। बालिकाओं में बालकों से अधिक खाने की समस्या और दुश्चिंता की समस्याऐं होती हैं, वहीं बालकों में अधिक अवसाद के लक्षण और व्यवहार सम्बन्धी समस्याऐं पाई जाती हैं।

❖ **हनसल एवं गौनकर (2008)** ने ''2003–05 के हॉस्टल के विद्यार्थियों के सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन'' शीर्षक पर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि हॉस्टल के विद्यार्थी अपने सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन से संतुष्ट हैं एवं इनमें ये समायोजन उच्च मात्रा में पाया गया। हॉस्टलर एवं गैर हॉस्टलर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता। लड़कों का सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन लड़कियों से अच्छा पाया गया।

❖ **डैनी (2014)** ने ''पुरानी (पिछली) उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध'' शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि जिन विद्यार्थियों की पिछली उपलब्धियाँ उच्च हैं, उनकी संवेगात्मक बुद्धि भी उच्च है तथा जिन बालकों की पिछली उपलब्धियाँ निम्न हैं, उनकी संवेगात्मक बुद्धि भी कम है।

इस प्रकार पिछली उपलब्धियाँ एवं संवेगात्मक बुद्धि एक दूसरे से धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित हैं।

❖ **शर्मा ए. (2014)** ने ''किशोरों में न्यून सामाजिक–आर्थिक स्थिति की मनोवैज्ञानिक संभावनाएं'' शीर्षक पर शोध कार्य कर निष्कर्ष निकाला कि न्यून सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में धन के अभाव, सही स्थान पर आवास का न होना, निम्न स्थिति, अभिभावक अशिक्षा, अभिभावकों का उनके प्रति गलत व्यवहार, अध्यापकों का उनके प्रति सख्त रवैया और व्यवहार असंतुलन जैसी समस्याओं को महसूस करते हैं। ये समस्याएँ उनमें कई विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं और निम्न स्व–छवी (Self Image) और अच्छा न दिखने जैसी समस्याओं को उत्पन्न कर देती हैं।

6. शोध अन्तराल :–

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत में किशोरावस्था के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि पर काफी अध्ययन हुए हैं। परन्तु इन दोनों चरों के साथ–साथ अध्ययन कम हुए हैं। सोनी, अनिता (2003), सईद, नवीला एवं कुमारी, के. भारती (2004), थॉमस, डैनी एवं शर्मा, वेंकटेश (2006), सिंह, प्रियंका (2006),सी. जायन(2006), कुक, डेंग और मोरगनो (2007), ऑर्थ, रॉबिन्स एवं राबर्टस (2008),हनसल एवं गौनकर (2008),डैनी (2014),शर्मा ए. (2014) आदि के शोध कार्यो में संकाय एवं विद्यालय के प्रकार आदि के आधार पर समायोजन तथा संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन नहीं हुआ हैं। इन

अध्ययनों से पता चलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का साथ-साथ एवं इनके स्वतंत्र चरों के साथ अध्ययन नहीं हुआ हैं

अतः प्रस्तावित शोध अध्ययन द्वारा मेरा उद्देश्य उस अन्तराल को पाटना है जो समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है। अतः किशोरावस्था में समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का एक साथ अध्ययन अपने आप में एक नया अध्ययन होगा। यह अध्ययन किशोरावस्था के कुछेक नये तथ्यों को प्रकट करके शोध अन्तराल को कम करने में सफल होगा। अतः मेरा अध्ययन कि **''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन''** एक उपयोगी, आवश्यक एवं शोध अन्तराल को कम करने वाला औचित्यपूर्ण अध्ययन सिद्ध होगा।

7. शोध की परिकल्पनाएं :–

प्रस्तावित शोध के परिकल्पना निम्नलिखित प्रकार से है–

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में उनके स्वतंत्र चरों के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में उनके स्वतंत्र चरों के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

8. शोध प्रणाली :–

प्रस्तावित शोध की प्रणाली निम्न प्रकार है :–

चर :–

प्रस्तावित शोध के निम्न चर होंगे –

स्वतंत्र चर –

प्रस्तावित शोध में शहरी–ग्रामीण, सरकारी–निजी विद्यालयों, लड़के–लड़कियां, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय आदि के किशोर विद्यार्थी स्वतंत्र चर होंगे।

आश्रित चर –

प्रस्तावित शोध में समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि आश्रित चर होंगे।

शोध प्रविधि –

प्रस्तावित शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या–

प्रस्तावित शोध में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा XIth एवं XIIth के किशोर विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

न्यादर्श –

प्रस्तावित शोध में न्यादर्श का चयन जयपुर जिले के किशोर विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा। न्यादर्श का चार्ट निम्नवत है –

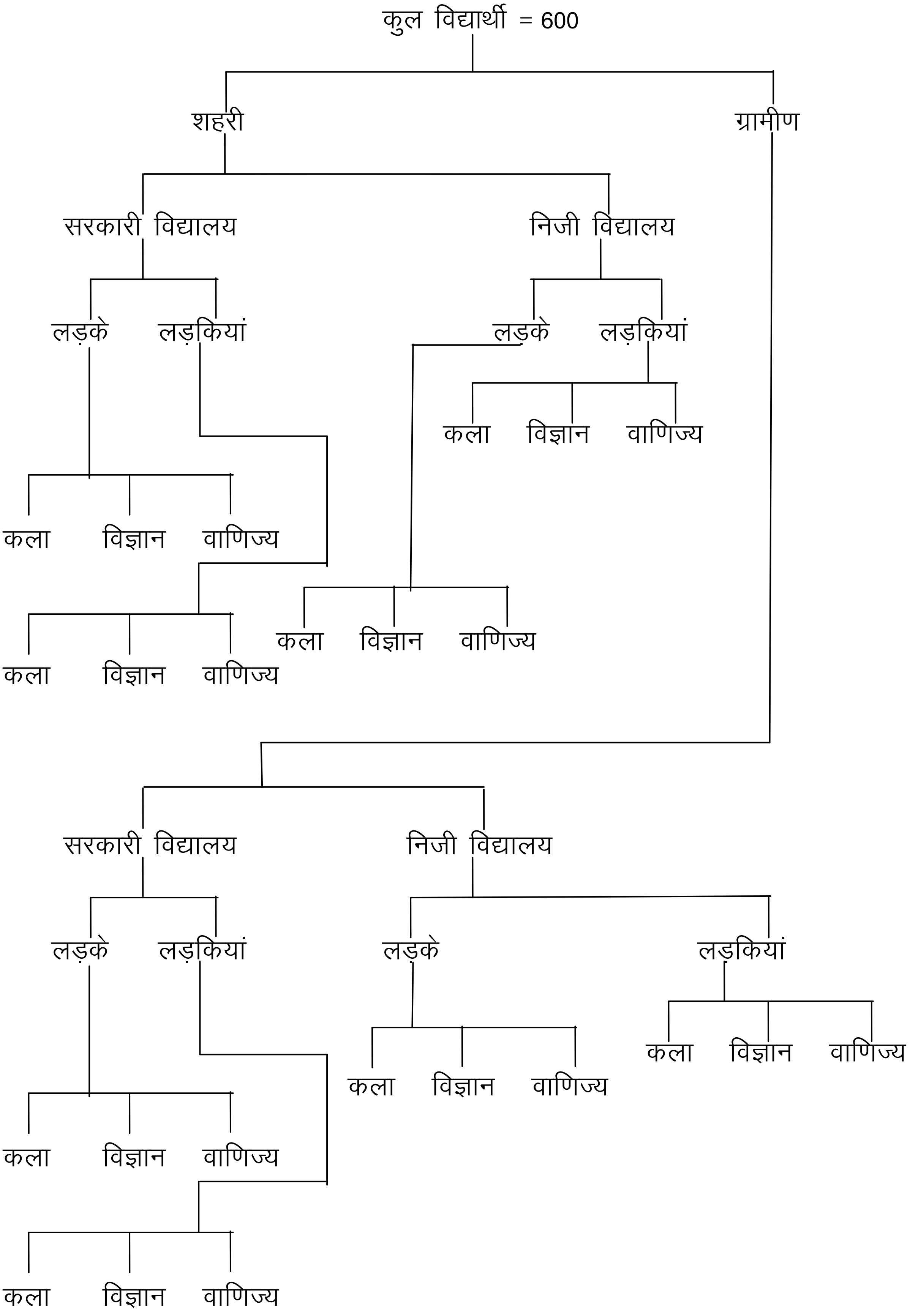
कुल विद्यार्थी = 600
शहरी
ग्रामीण
सरकारी विद्यालय
निजी विद्यालय
लड़के
लड़कियां
लड़के
लड़कियां
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य
सरकारी विद्यालय
निजी विद्यालय
लड़के
लड़कियां
लड़के
लड़कियां
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य
कला
विज्ञान
वाणिज्य

प्रदत्तों के स्त्रोत एवं प्रकृति –

प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि द्वारा प्राथमिक प्रदत्त संकलन किये जायेंगे। इसके लिए जयपुर जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा XIth एवं XIIth के किशोर विद्यार्थियों से सूचनाएं प्राप्त की जायेंगी।

शोध उपकरण –

प्रस्तावित शोध अध्ययन में किशोर विद्यार्थियों के समायोजन के आकलन हेतु स्वनिर्मित समायोजन मापनी उपकरण और संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु अनुकूल हैडे, संज्योत पेठे एवं उपिन्द्र धर द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा –

A. मध्यमान

B. मानक विचलन

C. टी.–परीक्षण

D. एफ–परीक्षण

E. सहसंबंध

F. रेखाचित्र निरूपण

शोध का परिसीमांकन –

किसी भी शोध कार्य की सीमा निर्धारित करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः प्रस्तावित शोध की निम्न सीमाएं निर्धारित की गई हैं–

- ✧ प्रस्तावित शोध जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय तक सीमित रहेगा।
- ✧ प्रस्तावित शोध कार्य में प्रदत्त संग्रहण हेतु केवल कक्षा XIth एवं XIIth में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
- ✧ प्रस्तावित शोध कार्य शहरी–ग्रामीण, लड़के–लड़कियां, सरकारी–निजी विद्यालय, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय आदि स्वतंत्र चरों तक रखा जायेगा।
- ✧ प्रस्तावित शोध में न्यादर्श के रूप में 600 विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

शोधार्थी द्वारा किये जाने वाले शोध अध्ययन का वर्षवार विवरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा वर्षवार शोध अध्ययन कार्य निम्न प्रकार किया जायेगा–

- ✸ **प्रथम वर्ष–**

  शोध अध्ययन की प्रस्तावना तैयार करना एवं संबंधित साहित्य का अध्ययन करना।

✸ **द्वितीय वर्ष–**

किशोर विद्यार्थियों के समायोजन के मापन हेतु स्वनिर्मित समायोजन मापनी का निर्माण करना, न्यादर्श का चयन करना एवं चयनित न्यादर्श पर उपकरणों का प्रशासन कर प्रदत्तों का संकलन करना।

✸ **तृतीय वर्ष–**

सांख्यिकी का प्रयोग कर प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करके निष्कर्ष निकालकर शोध अध्ययन को पूरा करना।

शोधार्थी द्वारा किये जाने वाले शोध अध्यन का अध्यायवार विवरण :–

प्रस्तुत शोध अध्यन में शोधार्थी द्वारा पांच अध्यायों में निम्न प्रकार कार्य किया जायेगा –

⅄ **प्रथम अध्याय : समस्या की पृष्ठभूमि :–**

प्रस्तावना, समस्या का औचित्य, समस्या कथन, तकनीकी शब्दों का पारिभाषीकरण, समस्या से उभरने वाले प्रश्न, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएँ, समस्या का परिसीमांकन आदि।

⅄ **द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–**

प्रस्तावना, सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ, सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ, पूर्व में हुए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन आदि।

- **तृतीय अध्याय : अध्ययन की योजना एवं कार्य विधि :–**

  प्रस्तावना, शोध प्रविधि, जनसंख्या, न्यादर्श, प्रदत्तों के स्रोत, प्रदत्तों की प्रकृति, शोध में प्रयुक्त उपकरण, अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी आदि।

- **चतुर्थ अध्याय : आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

  प्रस्तावना, प्रदत्तों का प्रस्तुतिकरण, विश्लेषण, व्याख्या आदि।

- **पंचम अध्याय : निष्कर्ष एवं सुझाव :–**

  प्रस्तावना, शोध से प्राप्त निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं आगामी शोध हेतु सुझाव आदि।

- **शोध सारांश**

- **सन्दर्भ सूची**

- **परिशिष्ट**

9. सन्दर्भ सूची :–

पुस्तकें :–

✪ **भार्गव, एम.(1993) :** ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन''; भार्गव बुक हाउस, राजा मंडी, आगरा।

✪ **भार्गव, यू.(1993) :** '' किशोर मनोविज्ञान''; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

✪ **माथुर, एस.एस.(1997) :** ''शैक्षिक मनोविज्ञान''; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

✪ **डॉ. सिंह,आर.एन.(2001) :** ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान''; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

✪ **सिंह, अरूण कुमार(2002)** : ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सांख्यिकी''; नोवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना–8।

✪ **डॉ. बघेला, हेतसिंह (2004)** : ''शिक्षा मनोविज्ञान''; राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।

✪ **दुबे, एल.एन. (2006) :** ''परामर्श मनोविज्ञान''; शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

✪ **अग्रवाल, जे.सी. (2006)** : ''भारत में प्राथमिक शिक्षा''; साहित्य प्रकाशन, आगरा।

✪ **पाठक, पी.डी. (2007)** : ''शिक्षा मनोविज्ञान''; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

✪ **कपिल, एच.के. (2014)** : ''सांख्यिकी के मूल तत्व''; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

✪ **शर्मा, आर.ए. (2014)** : ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया''; आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

पत्र–पत्रिकायें :–

✈ कुक, टी.डी., डेंग, वाई. एवं मोर्गन, ई. (2007) : '' मध्य किशोरावस्था के दौरान मित्रता का प्रभाव : मित्रों की श्रेणी का विशेष मूल्य'', जनरल ऑफ रिसर्च ऑन एडोलसेन्स, 17(2), 325–356

✈ ऑर्थ,यू.,रोबिन्स, आर.डब्ल्यू.एवं रोबर्ट, बी. डब्ल्यू. 2008 : '' किशोरावस्था एवं युवावस्था में न्यून स्वाभिमान से अवसाद के पूर्वानुमान की सम्भावनाएँ'', जनरल ऑफ पर्सनल्टी एण्ड सोसियल साइकोलोजी, 95(3), 697–708

✈ शर्मा, ए. (2014) : ''किशोरों में न्यून सामाजिक–आर्थिक स्थिति की मनौवैज्ञानिक संभावनाएँ'', इडियन जनरल ऑफ एडल्ट एजुकेशन, 75(2), 88–95

लघु शोध प्रबन्ध :–

● **खत्री, रवि (2009) :–** ''ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''; राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

* **शर्मा, निधि (2015) :–** ''अजमेर जिले के विद्यालयी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव''; वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।

Website:-

- ❖ http://www.indianjournals.com
- ❖ http://www.researchinventy.com
- ❖ http://www.ajournal.co.ulc
- ❖ http://www.education.nic
- ❖ http://www.jmi.ac.in
- ❖ http://www.ripublication.com
- ❖ http://www.shodhganga.com

Signature of Candidate with date.

Out Line of the Synopsis Approved

Signature of Supervisor with date

Dr.Suman Bala (Lecturer)

H.B.U. Teachers College for Women
Hatundi, Ajmer